रिसाला नं. 82

Meethe Bol (Hindi)

मीठे बोल

- आशिक़ाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात
- मुंह से फ़ुज़ूल बात निकल जाए तो क्या करे
- कब सुब्हानल्लाह कहना गुनाह है !
- फ़ोन पर की जाने वाली फ़ुज़ूल बातों की 5 मिसालें
- हाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत
- झूट पर मजबूर करने वाले सुवालात की 14 मिसालें
- घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मीठे बोल

येह रिसाला (**मीठे बोल**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात,

MO. 9898732611 E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मीठे बोल[1]

ग़ालिबन शैत़ान येह बयान पूरा (48 सफ़ह़ात) नहीं पढ़ने देगा मगर आप उस के वार को नाकाम बना दीजिये ।

क़ब्र में सज़ा का एक सबब

''अल क़ौलुल बदीअ़'' में नक़्ल है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्ह़ूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त होलनाकियों से दो चार हुवा, **मुन्कर नकीर** के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : **''दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वजह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है ।''** अब अ़ज़ाब के

مدینہ

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (**रबीउ़न्नूर शरीफ़** सि. 1430/2009) में बाबुल मदीना कराची में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।1 **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

फ़िरिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े। इतने में एक साहिब जो ह़ुस्नो जमाल के पैकर और मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र थे वोह मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान ह़ाइल हो गए। और उन्हों ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए आप कौन हैं ? फ़रमाया : **तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मामूर किया गया है।**

(अल क़ौलुल बदीअ़, स. 260, मुअस्सि-सतुर्रय्यान बैरूत)

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला
हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰه ! कस्रते दुरूद शरीफ़ की ब-र-कत से मदद करने के लिये क़ब्र में जब फ़िरिश्ता आ सकता है तो तमाम फ़िरिश्तों के भी आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुल बजा तो

फ़रियाद की है,

मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आक़ा

रोशन मेरी तुरबत को लिल्लाह शहा करना जब नज़्अ़ का वक़्त आए दीदार अ़ता करना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खुरासान के एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में हुक्म हुवा : "तातारी क़ौम में इस्लाम की दा'वत पेश करो !" उस वक़्त **हलाकू ख़ान** का बेटा तगूदार ख़ान बर सरे इक़्तिदार था। वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सफ़र कर के तगूदार ख़ान के पास तशरीफ़ ले आए। सुन्नतों के पैकर बा रीश मुसल्मान **मुबल्लिग़** को देख कर उसे मस्ख़री सूझी और कहने लगा : "मियां येह तो बताओ तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे या मेरे कुत्ते की दुम ?" बात अगर्चे गुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूंकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे लिहाज़ा निहायत नरमी के साथ फ़रमाने लगे : "मैं भी अपने ख़ालिक़ व मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुत्ता हूं अगर जां निसारी और वफ़ादारी से उसे ख़ुश करने में काम्याब हो जाऊं तो मैं अच्छा वरना आप के कुत्ते की दुम मुझ से अच्छी है जब कि वोह आप का फ़रमां बरदार व वफ़ादार रहे।" चूंकि वोह एक बा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

अ़मल मुबल्लिग़ थे। ग़ीबत व चुग़ली, ऐ़बजूई और बद कलामी नीज़ फ़ुज़ूल गोई वग़ैरा से दूर रहते हुए अपनी ज़बान को ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हमेशा तर रखते थे लिहाज़ा उन की ज़बान से निकले हुए **मीठे बोल** तासीर का तीर बन कर तगूदार ख़ान के दिल में पैवस्त हो गए कि जब उस ने अपने ''ज़हरीले कांटे'' के जवाब में उस बा अ़मल मुबल्लिग़ की त़रफ़ से ''ख़ुश्बूदार म-दनी फूल'' पाया तो पानी पानी हो गया और नरमी से बोला : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरे मेहमान हैं मेरे ही यहां क़ियाम फ़रमाइये। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के पास मुक़ीम हो गए। तगूदार ख़ान रोज़ाना रात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه निहायत ही शफ़्क़त के साथ उसे **नेकी की दा'वत** पेश करते। आप की सअ़्ये पैहम ने तगूदार ख़ान के दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया ! वोही **तगूदार ख़ान** जो कल तक इस्लाम को **सफ़्हए** हस्ती से मिटाने के दर पै था आज **इस्लाम का शैदाई** बन चुका था। उसी **बा अ़मल मुबल्लिग़** के हाथों तगूदार ख़ान अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसल्मान हो गया उस का इस्लामी नाम ''अह़मद'' रखा गया।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

तारीख़ गवाह है कि एक मुबल्लिग़ के **मीठे बोल** की ब-र-कत से वस्त एशिया की ख़ूख़ार तातारी सल्त़नत इस्लामी हुकूमत से बदल गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

मीठी ज़बान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने? मुबल्लिग़ हो तो ऐसा! अगर तगूदार ख़ान के तीखे जुम्ले पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ग़ुस्से में आ जाते तो हरगिज़ येह **म-दनी नताइज** बर आमद न होते। लिहाज़ा कोई कितना ही ग़ुस्सा दिलाए हमें अपनी **ज़बान** को क़ाबू में ही रखना चाहिये कि जब येह बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बने बनाए खेल भी बिगाड़ कर रख देती है। **मीठी ज़बान** ही तो थी कि जिस की शीरीनी और चाशनी ने तगूदार ख़ान जैसे वह़शी और ख़ूंख़ार इन्साने बद तर अज़ ह़ैवान को इन्सानियत के बुलन्दो बाला मन्सब पर फ़ाइज़ कर दिया।

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

गोश्त की छोटी सी बोटी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान अगर्चे ब ज़ाहिर **गोश्त की एक छोटी सी बोटी** है मगर येह ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीमुश्शान ने'मत है। इस ने'मत की क़द्र तो शायद गूंगा ही जान सकता है। **ज़बान** का दुरुस्त इस्ति'माल **जन्नत** में दाख़िल और ग़लत़ इस्ति'माल **जहन्नम** से वासिल कर सकता है। अगर कोई बद तरीन काफ़िर भी दिल की तस्दीक़ के साथ ज़बान से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ ले तो कुफ़्रो शिर्क की सारी गन्दगी से पाक हो जाता है उस की ज़बान से निकला हुवा येह कलिमए त़य्यिबा उस के गुज़श्ता तमाम गुनाहों के मैल कुचैल को धो डालता है। ज़बान से अदा किये हुए इस कलिमए पाक के बाइ़स वोह गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसा कि उस रोज़ था जिस रोज़ उस की मां ने उसे जना था। येह अ़ज़ीम म-दनी इन्क़िलाब दिल की ताईद के साथ ज़बान से अदा किये हुए कलिमे शरीफ़ की बदौलत आया।

हर बात पर साल भर की इबादत का सवाब

ऐ काश ! हम भी अपनी ज़बान का सह़ीह़ इस्ति'माल

करना सीख लें। **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़ी के मुताबिक़ अगर **ज़बान** को चलाया जाए तो जन्नत में घर तय्यार हो जाएगा। इस ज़बान से हम तिलावते कुरआने पाक करें, ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करें, दुरूदो सलाम का विर्द करें, ख़ूब ख़ूब **नेकी की दा'वत** दें तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हमारे वारे ही न्यारे हो जाएंगे। मुका-श-फ़तुल कुलूब में है : ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए और उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस शख़्स का बदला क्या होगा ? फ़रमाया : "मैं उस के हर कलिमे के बदले **एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।"

(मुका-श-फ़तुल कुलूब, स. 48, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

आ़शिक़ाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की बात बताने गुनाह से नफ़रत दिलाने और इन कामों के लिये किसी पर **इन्फ़िरादी कोशिश** का सवाब कमाने के लिये येह ज़रूरी नहीं

कि जिस को समझाया वोह मान जाए तो ही सवाब मिलेगा बल्कि अगर वोह न माने तब भी اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सवाब ही सवाब है और अगर आप की **इन्फ़िरादी कोशिश** से किसी ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारनी शुरूअ़ कर दी फिर तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आप के भी वारे न्यारे हो जाएंगे। आइये इस ज़िम्न में **इन्फ़िरादी कोशिश** की एक **म-दनी बहार** सुनते चलें चुनान्चे शहर क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक नौ जवान इस्लामी भाई की तह़रीर बित्तसर्रुफ़ पेश करता हूं : "मैं उन दिनों मेट्रिक का त़ालिबे इ़ल्म था, बुरी सोह़बत के बाइ़स ज़िन्दगी गुनाहों में बसर हो रही थी, मिज़ाज बेह़द ग़ुसीला था और बद तमीज़ी की आ़दते बद इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद साह़िब क़ुजा दादाजान और दादीजान के सामने क़ैंची की त़रह़ ज़बान चलाता। एक रोज़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का एक म-दनी क़ाफ़िला हमारे मह़ल्ले की मस्जिद में आ पहुंचा, ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि मैं **आ़शिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गया। एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे **दर्स** में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

शिरकत की दा'वत पेश की, उन के **मीठे बोल** ने मुझ पर ऐसा असर किया कि मैं उन के साथ बैठ गया। उन्हों ने **दर्स** के बा'द इन्तिहाई मीठे अन्दाज़ में मुझे बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द सह़राए मदीना मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में **दा'वते इस्लामी का तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है आप भी शिरकत कर लीजिये। उन के **दर्स** ने मुझ पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा मैं इन्कार न कर सका। यहां तक कि मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना, मुलतान) में ह़ाज़िर हो गया। वहां की रोनक़ें और ब-र-कतें देख कर मैं ह़ैरान रह गया, इज्तिमाअ़ में होने वाले आख़िरी बयान **"गाने बाजे की होल नाकियां"** सुन कर मैं थर्रा उठा और आंखों से आंसू जारी हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाहों से तौबा कर के उठा और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया। मेरी **म-दनी माह़ोल** से वाबस्तगी से हमारे घर वालों ने इत़्मीनान का सांस लिया, दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से मुझ जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक़ और ख़स्ता ख़राब नौ जवान में म-दनी इन्क़िलाब से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मु-तअस्सिर हो कर मेरे बड़े भाई ने भी दाढ़ी मुबारक रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। मेरी एक ही बहन है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी उस इकलौती बहन ने भी **म-दनी बुरक़अ** पहन लिया, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर का हर फ़र्द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم का मुरीद हो गया। और उस इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले मेरे मोह़सिन इस्लामी भाई के मीठे बोल की ब-र-कत से मुझ पर **अल्लाहु** आ'ज़म عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि मैं ने **क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़** करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली और दर्से **निज़ामी** (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त **द-र-जए सालिसा** या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुका हूं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाक़ाई क़ाफ़िला ज़िम्मादार** हूं। मेरी निय्यत है कि اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1427 हि. से यक मुश्त **12 माह के लिये म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करूंगा।''

दिल पे गर ज़ंग हो, घर का घर तंग हो — होगा सब का भला, क़ाफ़िले में चलो

ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़्ज़ कुरआन हो — कर के हिम्मत ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मग़्फ़िरत की बिशारत

इस ज़बान से तिलावते कुरआने पाक कीजिये और सवाब का ढेरों ख़ज़ाना ह़ासिल कीजिये । चुनान्चे "रूहुल बयान" में येह ह़दीसे कुदसी है : जिस ने एक बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم को अल ह़म्द शरीफ़ के साथ मिला कर (या'नी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن ख़त्मे सूरह तक) पढ़ा तो तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया, उस की तमाम नेकियां क़बूल फ़रमाईं और उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये और उस की ज़बान को हरगिज़ न जलाऊंगा और उस को अ़ज़ाबे क़ब्र, अ़ज़ाबे नार, अ़ज़ाबे क़ियामत और बड़े ख़ौफ़ से नजात दूंगा । (रूहुल बयान, जि. 1, स. 9 दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत) मिलाने का मज़ीद वाज़ेह़ त़रीक़ा समाअ़त फ़रमा लीजिये :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِی۔ مِل۔ حَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن ...... (सूरह पूरी कीजिये)

हूरें पाने का अ़मल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! थोड़ी सी ज़बान चलाइये,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْم कह लीजिये और जन्नत की हूरें हासिल कीजिये चुनान्चे "**रौज़ुर्रियाहीन**" में है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने चालीस साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की, एक बार दुआ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत से मुझे जो कुछ जन्नत में मिलने वाला है उस की कोई झलक दुन्या में भी दिखा दे। अभी दुआ जारी थी कि यक दम मेह़राब शक़ हुई और उस में से एक ह़सीना व जमीला **हूर** बर आमद हुई, उस ने कहा कि तुझे जन्नत में मुझ जैसी **सो हूरें** इनायत की जाएंगी, जिन में हर एक की सो सो ख़ादिमाएं और हर ख़ादिमा की सो सो कनीज़ें होंगी और हर कनीज़ पर सो सो नाज़िमाएं (या'नी इन्तिज़ाम करने वालियां) होंगी। येह सुन कर वोह बुज़ुर्ग ख़ुशी के मारे झूम उठे और सुवाल किया : क्या किसी को **जन्नत** में मुझ से ज़ियादा भी मिलेगा ? जवाब मिला : इतना तो हर उस आम जन्नती को मिलेगा जो सुब्ह़ व शाम اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْم पढ़ लिया करता है।

(रौज़ुर्रियाहीन, स. 55, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत)

दीवाने हो जाओ

इस ज़बान को हर वक़्त ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तर रखिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

और सवाब का ख़ज़ाना लूटिये, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : इस कसरत के साथ ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ किया करो कि लोग **दीवाना** कहने लगें । (अल मुस्तद्रक लिल हाकिम, जि. 2, स. 173, हदीस : 1882, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

एक और हदीसे पाक में फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इतनी कसरत से ज़िक्र करो कि मुनाफ़िक़ीन तुम्हें **रियाकार** कहने लगें ।" (अल मो'जमुल कबीर लित्त-बरानी, जि. 12, स. 131, हदीस : 12786, दारो एहयाइत्तुरासिल अ-रबी बैरूत)

दरख़्त लगा रहा हूं

हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ज़बान का कितना प्यारा इस्ति'माल बताया आप भी सुनिये और झूमिये चुनान्चे "इब्ने माजह" की रिवायत में है, (एक बार) मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुला-हज़ा फ़रमाया कि एक पौदा लगा रहे हैं । इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या कर रहे हो ?" अ़र्ज़

की : **दरख़्त** लगा रहा हूं। फ़रमाया : "मैं **बेहतरीन दरख़्त** लगाने का त़रीक़ा बता दूं ! سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر पढ़ने से हर कलिमे के इ़वज़ (या'नी बदले) जन्नत में एक दरख़्त लग जाता है।" (सु-नने इब्ने माजह, जि. 4, स. 252, ह़दीस : 2807)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में चार कलिमे इर्शाद फ़रमाए गए हैं : (1) سُبْحٰنَ الله (2) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ (3) لَا اِلٰهَ اِلَّا الله (4) اَللّٰهُ اَكْبَر येह चारों कलिमात पढ़ें तो **जन्नत में चार दरख़्त** लगाए जाएं और कम पढ़ें तो कम। म-सलन अगर سُبْحٰنَ الله कहा तो एक दरख़्त। इन कलिमात को पढ़ने के लिये ज़बान चलाते जाइये और जन्नत में ख़ूब ख़ूब दरख़्त लगवाते जाइये।

उ़म्र रा ज़ाएअ़ मकुन दर गुफ़्त-गू *ज़िक्रे ऊ कुन ज़िक्रे ऊ कुन ज़िक्रे ऊ*

(या'नी फ़ालतू बातों में उ़म्रे अ़ज़ीज़ ज़ाएअ़ मत कर, ज़िक्रुल्लाह कर, ज़िक्रुल्लाह कर, ज़िक्रुल्लाह कर)

80 बरस के गुनाह मुआ़फ़

इसी त़रह़ ज़बान का एक इस्ति'माल येह भी है कि **दुरूदो सलाम** पढ़ते रहिये और गुनाह बख़्शवाते रहिये जैसा कि **दुर्रे मुख़्तार** में है : "जो सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर

एक बार दुरूद भेजे और वोह क़बूल हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अस्सी (**80**) बरस के गुनाह मिटा देगा।''

(दुर्रे मुख़्तार, जि. 2, स. 284, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्नूअ़ है

बा'ज़ लोग इस त़रह़ कह देते हैं : ''बिस्मिल्लाह कीजिये !'' ''आओ जी बिस्मिल्लाह !'' ''मैं ने बिस्मिल्लाह कर डाली'', ताजिर ह़ज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उ़मूमन ''बोनी'' कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग इस को भी ''बिस्मिल्लाह'' कहते हैं, म-सलन ''मेरी तो आज अभी तक बिस्मिल्लाह ही नहीं हुई !'' जिन जुम्लों की मिसालें पेश की गईं येह सब ग़लत़ अन्दाज़ हैं। इसी त़रह़ खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्सर खाने वाला उस से कहता है : आइये ! आप भी खा लीजिये, आ़म त़ौर पर जवाब मिलता है : ''बिस्मिल्लाह'' या इस त़रह़ कहते हैं : ''बिस्मिल्लाह कीजिये !'' मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 22 पर है कि, इस मौक़अ़ पर इस त़रह़ बिस्मिल्लाह कहने को उ़-लमा ने बहुत **सख़्त मम्नूअ़** क़रार दिया है।'' हां येह कह सकते हैं :

बिस्मिल्लाह पढ़ कर खा लीजिये। बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर दुआइया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, म-सलन بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और तुम्हें ब-र-कत दे। या अपनी मादरी ज़बान में कह दीजिये : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत दे।

बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है

ह़राम व ना जाइज़ काम से क़ब्ल बिस्मिल्लाह शरीफ़ हरगिज़, हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए। ह़रामे क़त़्ई काम से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना कुफ़्र है चुनान्चे "फ़तावा आ़लमगीरी" में है : **"शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त या जूआ खेलते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना कुफ़्र है।"**

(फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 2, स. 273)

कब ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करना गुनाह है !

याद रखिये ! ज़बान से ज़िक्रो दुरूद बाइ़से अज्रो सवाब भी है और बा'ज़ सूरतों में मम्नूअ़ भी, म-सलन "मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 533 पर है : गाहक को सौदा दिखाते वक़्त ताजिर का इस ग़रज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ना या سُبْحٰنَ اللّٰه कहना कि उस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़िरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

चीज़ की उ़म्दगी ख़रीदार पर ज़ाहिर करे **ना जाइज़** है। यूंही किसी बड़े को देख कर इस निय्यत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ना कि लोगों को उस के आने की ख़बर हो जाए ताकि उस की ता'ज़ीम को उठें और जगह छोड़ दें **ना जाइज़** है।

(रद्दुल मुह़तार, जि. 2, स. 281, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी जुज़्इये के पेशे नज़र मैं अक्सर इस्लामी भाइयों को समझाता रहता हूं कि मेरी आमद पर **''अल्लाह अल्लाह''** की सदाएं बुलन्द न किया करें क्यूं कि ब ज़ाहिर यहां ज़िक्रुल्लाह नहीं इस्तिक़्बाल मक़्सूद होता है।

खीचड़े को ह़लीम कहना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक सिफ़ाती नाम **ह़लीम** عَزَّوَجَلَّ भी है लिहाज़ा खाने की चीज़ को ह़लीम कहना अगर्चे जाइज़ है मगर मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) अच्छा नहीं लगता। इस ग़िज़ा को उर्दू में **खिचड़ा** भी कहते हैं लिहाज़ा ह़त्तल वस्अ़ मैं येही लफ़्ज़ इस्ति'माल करता हूं, तज़्किरतुल औलिया में है : ह़ज़रते सय्यिदुना बा **यज़ीद बिस्त़ामी** قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامی ने एक बार सुर्ख़ रंग का सेब हाथ में ले कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

फ़रमाया : ''येह बहुत **लत़ीफ़** है।'' ग़ैब से आवाज़ आई : ''हमारा नाम **सेब** के लिये इस्ति'माल करते हुए ह़या नहीं आई!'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चालीस दिन के लिये अपनी याद आप के क़ल्ब से निकाल दी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी क़सम खाई कि अब (अपने वत़न) **बिस्त़ाम** (शहर का नाम) का फल नहीं खाऊंगा। (तज़्किरतुल औलिया, स. 134) देखा आप ने! ''**लत़ीफ़**'' का एक लफ़्ज़ी मा'ना ''उ़म्दा'' भी है मगर चूंकि ''**लत़ीफ़**'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम है इस लिये सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی को तम्बीह की गई।

लाख गुना सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! वाक़ेई अगर हम अपनी ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल करें तो वक़्तन फ़ वक़्तन ढेर सारी नेकियां ह़ासिल कर सकते हैं। ह़दीसे पाक में है कि बाज़ार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले के लिये हर बाल के बदले क़ियामत में नूर होगा। (शु-अ़बुल ईमान लिल बैहक़ी, जि. 1, स. 412, ह़दीस : 567, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

याद रहे! तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

दुआ, दुरूदो सलाम, ना'त, ख़ुत्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा सब "ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ" में शामिल हैं। लिहाज़ा हर इस्लामी भाई को चाहिये कि रोज़ाना कम से कम 12 मिनट बाज़ार में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स दे। जितनी देर तक दर्स देगा उतनी देर का اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उसे बाज़ार में ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करने का सवाब मिलेगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत

سُبْحٰنَ الله ! कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो अपनी ज़बान को **नेकी की दा'वत**, सुन्नतों भरे **बयान** और ज़िक्रो दुरूद में लगाए रखते हैं। मुसल्मान की ह़ाजत रवाई करना कारे सवाब है नीज़ बीमार या परेशान मुसल्मान को तसल्ली देना भी ज़बान का अ़ज़ीमुश्शान इस्ति'माल है। चुनान्चे

इयादत का अ़ज़ीमुश्शान सवाब

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

ने फ़रमाया : "जो अपने किसी मुसल्मान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **पछत्तर हज़ार मलाएका** के ज़रीए़ साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रह़मत में ग़ोता़ ज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक **ह़ज** और एक **उ़म्रे** का सवाब लिखता है। और जिस ने **मरीज़ की इ़यादत** की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **पछत्तर हज़ार मलाएका** के ज़रीए़ साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक द-रजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रह़मत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी।" (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, ह़दीस : 13, जि. 4, स. 165) जब किसी का बच्चा बीमार हो जाए, कोई बे रोज़गार या क़र्ज़दार हो जाए, ह़ादिसे का शिकार हो जाए, चोर या डाकू माल ले कर फ़िरार हो जाए, कारोबार में नुक़्सान से हम किनार हो जाए कोई चीज़ गुम हो जाने के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

सबब बे क़रार हो जाए, अल ग़रज़ किसी त़रह़ की भी परेशानी से दो चार हो जाए उस की दिलजूई के लिये ज़बान चलाना बहुत बड़े सवाब का काम है। चुनान्चे

जन्नत के दो जोड़े

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, रसूले अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी **ग़मज़दा** शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और ह़ूरों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा जो किसी **मुसीबत ज़दा** से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती।" (अल मो'जमुल औसत़ लित़्-बरानी, जि. 6, स. 429, ह़दीस : 9292, दारुल फ़िक्र बैरूत)

ज़बान मुफ़ीद भी है मुज़िर भी

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़बान का सह़ीह़ इस्ति'माल करने के बे शुमार फ़वाइद हैं और अगर येही ज़बान **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमान बन कर चली तो बहुत बड़ी आफ़त का सामान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

है। मशहूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : इन्सान की अक्सर ख़त़ाएं इस की ज़बान में होती हैं।

(शु-अ़बुल ईमान, जि. 4, स. 240, ह़दीस : 4933)

रोज़ाना सुब्ह़ आ'ज़ा ज़बान की ख़ुशामद करते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है : जब इन्सान सुब्ह़ करता है तो उस के तमाम आ'ज़ा **ज़बान** की ख़ुशामद करते हैं, कहते हैं : "हमारे बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर ! क्यूं कि हम तुझ से वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रहेगी तो हम सीधे रहेंगे अगर तू टेढ़ी होगी तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे।"

(सु-ननुत्तिरमिज़ी, जि. 4, स. 183, ह़दीस : 2415, दारुल फ़िक्र बैरूत)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : नफ़्अ़ नुक़्सान राह़त व आराम तकालीफ़ व आलाम में (ऐ ज़बान !) हम तेरे साथ वाबस्ता हैं अगर तू ख़राब होगी हमारी शामत आ जावेगी तू दुरुस्त होगी हमारी इ़ज़्ज़त होगी। ख़याल रहे कि **ज़बान** दिल की तरजुमान है इस की अच्छाई बुराई दिल की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अच्छाई बुराई का पता देती है। (मिरआत, जि. 6, स. 465)

ज़बान की बे एह़तियाती की आफ़तें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ज़बान अगर टेढ़ी चलती है तो बा'ज़ अवक़ात फ़सादात बरपा हो जाते हैं, इसी **ज़बान** से अगर मर्द अपनी मदख़ूला बीवी को त़लाक़ त़लाक़ त़लाक़ कह दे तो त़लाक़े मुग़ल्लज़ा वाक़ेअ़ हो जाती है, इसी ज़बान से अगर किसी को बुरा भला कहा और उस को तै़श (या'नी ग़ुस्सा) आ गया तो बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक नौबत पहुंच जाती है। इसी ज़बान से किसी मुसल्मान को बिला इजाज़ते शर-ई डांट दिया और उस की दिल आज़ारी कर दी तो यक़ीनन इस में गुनहगारी और जहन्नम की ह़क़दारी है। "त़-बरानी शरीफ़" की रिवायत में है, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।"

(अल मो'जमुल औसत़, जि. 2, स. 386, ह़दीस : 3607)

दाइमी रिज़ा व नाराज़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ

रिवायत करते हैं, सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : कोई शख़्स अच्छी बात बोल देता है उस की इन्तिहा नहीं जानता इस की वजह से उस के लिये **अल्लाह** की रिज़ा उस दिन तक के लिये लिख दी जाती है जब वोह उस से मिलेगा। और एक आदमी बुरी बात बोल देता है जिस की इन्तिहा नहीं जानता **अल्लाह** उस की वजह से अपनी नाराज़ी उस दिन तक लिख देता है जब वोह उस से मिलेगा। (मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2, स. 193, ह़दीस : 4833, सु-ननुत्तिरमिज़ी, जि. 4, स. 143, ह़दीस : 2326)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (बा'ज़ अवक़ात आदमी) कोई बात ऐसी बुरी बोल देता है जिस से रब तआ़ला हमेशा के लिये नाराज़ हो जाता है लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि बहुत सोच समझ कर बात किया करे। **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) फ़रमाया करते थे कि मुझे बहुत सी बातों से बिलाल इब्ने ह़ारिस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की (मज़्कूरा) ह़दीस रोक देती है। (मिरक़ात) या'नी मैं कुछ

बोलना चाहता हूं कि येह ह़दीस सामने आ जाती है और मैं ख़ामोश हो जाता हूं। (मिरआत, जि. 6, स. 462)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे सोचे समझे बोल पड़ना बेह़द ख़त़रनाक नताइज का ह़ामिल हो सकता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हमेशा हमेशा की **नाराज़ी** का बाइ़स बन सकता है। यक़ीनन **ज़बान का कुफ़्ले** मदीना लगाने ही में आ़फ़िय्यत है। ख़ामोशी की आ़दत डालने के लिये कुछ न कुछ गुफ़्त-गू लिख कर या इशारे से कर लिया करना बेह़द मुफ़ीद है क्यूं कि जो ज़ियादा बोलता है उ़मूमन ख़त़ाएं भी ज़ियादा करता है, राज़ भी फ़ाश कर डालता है। ग़ीबत व चुग़ली और ऐ़ब जूई जैसे गुनाहों से बचना भी ऐसे शख़्स के लिये बहुत दुश्वार होता है। बल्कि बक बक का आ़दी बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَاللّٰہ कुफ़्रियात भी बक डालता है !

दिल की सख़्ती का अन्जाम

अल्लाहु रह़मान عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़्म फ़रमाए और ज़बान को लगाम नसीब करे कि येह ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल रह कर फ़ुज़ूल बोल बोल कर दिल को सख़्त कर देती है। **अल्लाहु**

ग़नी के प्यारे नबी मक्की म–दनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है **:** फ़ोहूश गोई सख़्त दिली से है और सख़्त दिली आग में है। (सु–ननुत्तिरमिज़ी, जि. 3, स. 406, ह़दीस **:** 2016)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं **:** या'नी जो शख़्स ज़बान का बेबाक हो कि हर बुरी भली बात बे धड़क मुंह से निकाल दे तो समझ लो कि **उस का दिल सख़्त है** उस में **ह़या** नहीं। **सख़्ती** वोह दरख़्त है जिस की जड़ इन्सान के दिल में है और इस की शाख़ दोज़ख़ में। ऐसे बे धड़क इन्सान का अन्जाम येह होता है कि वोह **अल्लाह रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बारगाह में भी बे अदब हो कर काफ़िर हो जाता है। (मिरआत, जि. 6, स. 641)

ज़बान कुचल डाली !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ज़ियादा बातें करना बेह़द ख़त़रनाक है। कि مَعَاذَ اللّٰه आदमी बसा अवक़ात फ़ुज़ूल बोलते चले जाने के सबब **कुफ़्र** के ग़ार में गिर सकता है। **काश !** हम बोलने से पहले तोलने के आ़दी हो जाएं कि हम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

जो बोलना चाहते हैं इस में आख़िरत का कोई फ़ाएदा है या नहीं ? अगर नहीं तो फिर ज़हे नसीब ! बात करने के बजाए उतनी देर **दुरूद शरीफ़** पढ़ लें कि इस त़रह़ आख़िरत का अ़ज़ीम फ़ाएदा ह़ासिल हो जाएगा ! "**अस्सारुल औलिया** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى" में है : "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ज़बाने पाक से एक मर्तबा एक फ़ुज़ूल बात निकल गई, **आप** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **ने** पशेमान हो कर (बे ख़ुदी के आ़लम में) **ज़बान को दांतों तले इस ज़ोर से दबाया कि ख़ून निकल आया ! और उस एक बेकार जुम्ले के कफ़्फ़ारे में बीस बरस तक (बिला ज़रूरत) किसी से गुफ़्त-गू नहीं की !"** (अस्सारुल औलिया, स. 33, मुलख़्ख़सन, शब्बीर बिरादर्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الامین صلی اللہ تعالی علیہ واٰلہٖ وسلم

मुंह से फ़ुज़ूल बात निकल जाए तो क्या करे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़ुज़ूल बात के सुदूर के सबब सदमे से चूर हो कर अपनी ज़बान ही कुचल डाली ! यहां

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

येह मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि होश व ह़वास में रहते हुए अपने आप को अज़िय्यत देने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं लिहाज़ा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के अपने आप को ज़ख़्मी कर देने के वाक़िआ़त में येह तावील ली जाएगी कि उन्हों ने बे ख़ुदी के आ़लम में ऐसा किया कि "होश में जो न हो वोह क्या न करे" बहर ह़ाल येह उन्हीं का ह़िस्सा था। **काश !** हम सिर्फ़ इतना ही करें कि फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में बत़ौरे कफ़्फ़ारा 12 बार **अल्लाह अल्लाह** कह लिया करें या एक बार दुरूद शरीफ़ ही पढ़ लें। इस त़रह़ करने से हो सकता है कि शैत़ान हमें इस ख़ौफ़ से फ़ुज़ूल बातें करने पर न उभारे कि येह लोग कहीं ज़िक्रो दुरूद का विर्द कर के मुझे परेशानी में न डाल दें! जी हां! **मिन्हाजुल आ़बिदीन** में मन्क़ूल है : "शैत़ान के लिये ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ इतना तक्लीफ़ देह है जैसे कि इन्सान के पहलू में आकिला।" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 46, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत) मरज़े आकिला एक ऐसी बीमारी है जो इन्सान के गोश्त पोस्त को मु-तअस्सिर करती है और जिस्म से गोश्त ख़ुद ब ख़ुद जुदा होना शुरूअ़ हो जाता है।

फ़ुज़ूल जुम्लों की 14 मिसालें

अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! आज कल अच्छी सोह़बतें कमयाब हैं। कई अच्छे नज़र आने वाले भी बद क़िस्मती से भलाई की बातें करने के बजाए फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल नज़र आ रहे हैं। काश ! हम सिर्फ़ **रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ ही की ख़ातिर लोगों से मुलाक़ात करें और हमारा मिलना सिर्फ़ ज़रूरत की बात करने की ह़द तक हो। **याद रहे !** ''बे फ़ाएदा बातों में मस्रूफ़ होना या फ़ाएदा मन्द गुफ़्त-गू में ज़रूरत से ज़ियादा अल्फ़ाज़ मिला लेना ह़राम या गुनाह नहीं अलबत्ता इसे छोड़ना बहुत बेहतर है।'' (एह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 143, दारो सादिर बैरूत) ग़ैर ज़रूरी बातें करते करते ''गुनाहों भरी'' बातों में जा पड़ने का क़वी इम्कान रहता है लिहाज़ा **ख़ामोशी** ही में भलाई है। हमारे मुआ़शरे में आज कल बिला ह़ाजत ऐसे ऐसे सुवालात भी किये जाते हैं कि सामने वाला शरमिन्दा हो जाता है और अगर जवाब में एह़तियात़ से काम न ले तो झूट के गुनाह में भी पड़ सकता है। बसा अवक़ात इस त़रह़ के सुवालात ज़रूरतन भी किये जाते हैं अगर ऐसा है तो **फ़ुज़ूल** न हुए। इस त़रह़ के सुवालात की मिसालें पेशे ख़िदमत हैं अगर ज़रूरत है तो ठीक और

इस के बिग़ैर काम चल सकता है तो मुसल्मानों को शरमिन्दगी या गुनाहों के ख़दशात से बचाइये। म-सलन (**1**) हां भई क्या हो रहा है ! (**2**) यार ! आज कल दुआ़ वुआ़ नहीं करते ! (**3**) अरे भाई ! नाराज़ हो क्या ? (**4**) यार ! लगता है आप को मज़ा नहीं आया ! (**5**) येह गाड़ी कितने में ख़रीदी ? (**6**) किस साल का मॉडल है ? (**7**) आप के अ़लाक़े में मकान का क्या भाव चल रहा है ? (**8**) यार ! महंगाई बहुत ज़ियादा है (**9**) फ़ुलां जगह पर मौसिम कैसा है ? (**10**) उफ़ ! इतनी गरमी ! (**11**) आज कल तो कड़कड़ाती सर्दी है (**12**) न जाने येह बारिश अब रुकेगी भी या नहीं ! (**13**) ज़रा बारिश आई कि बिजली गई ! (**14**) आप के यहां बिजली थी या नहीं वग़ैरा वग़ैरा। उ़मूमन मु-तज़क्करा कलिमात और इस त़रह़ के बे शुमार फ़िक़्रात बिला ज़रूरत बोले जाते हैं। ताहम इस त़रह़ के जुम्ले बोलने वाले के **मु-तअ़ल्लिक़** कोई बुरी राय क़ाइम न की जाए, बल्कि हुस्ने ज़न ही से काम लिया जाए कि हो सकता है जो बात फ़ुज़ूल लग रही है इस में क़ाइल की कोई मस्लह़त हो जो मैं नहीं समझ सका। बिलफ़र्ज़ वोह सुवाल या जुम्ला फ़ुज़ूल भी हो तब भी क़ाइल गुनहगार नहीं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़िरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

ह़ज से लौटने वाले से फ़ुज़ूल सुवालात की 13 मिसालें

सफ़रे मदीना से लौटने वाले ह़ाजियों से भी अक्सर दोस्त अह़बाब त़रह़ त़रह़ के ग़ैर ज़रूरी सुवालात करते हैं इन की 13 मिसालें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : (**1**) सफ़र में कोई तक्लीफ़ तो नहीं हुई ? (**2**) भीड़ तो बहुत होगी ! (**3**) महंगाई तो नहीं थी ? (**4**) मकान सह़ीह़ मिला या नहीं ? (**5**) घर ह़रम से दूर था या क़रीब ? (**6**) वहां का मौसिम कैसा था ? (**7**) ज़ियादा गरमी तो नहीं थी ? (**8**) रोज़ाना कितने त़वाफ़ करते थे ? (**9**) कितने उ़म्रे किये ? (**10**) मक्के में मेरे लिये ख़ूब दुआ़एं मांगी या नहीं ? (**11**) मिना में आप का ख़ैमा जमरात से क़रीब था या दूर ? (**12**) मदीने में कितने दिन मिले ? (**13**) मदीने में मेरा नाम ले कर सलाम कहा या नहीं ? जिन सुवालात की मिसालें दी गईं वोह अगर्चे ना जाइज़ नहीं ताहम पूछने से पहले इस की मस्लह़त पर ग़ौर कर लीजिये, अगर ह़ाजत न हो तो न पूछिये क्यूं कि इन में बा'ज़ सुवालात ह़ाजी को शरमिन्दा करने वाले, बा'ज़ तरद्दुद में डालने वाले और बा'ज़ के जवाबात में अगर एह़तियात़ न की गई तो झूट के गुनाह में फंसाने वाले हैं। लिहाज़ा "एक चुप हज़ार सुख"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

बुरी या गुनाहों भरी बकवासों की चार मिसालें

बा'ज़ बातूनी लोग बिला तह़क़ीक़ गुनाहों और तोह्मतों भरे जुम्ले बोलने से भी गुरेज़ नहीं करते, इस की चार मिसालें सुनिये : (**1**) हमारा सारा ही ख़ानदान (या सारा गाउं) बद मज़्हब हो गया है एक मैं ही बचा हुवा हूं (ह़ालां कि उ़मूमन ऐसा नहीं होता, बड़े बूढ़े, ख़वातीन और बच्चे अक्सर मह़फ़ूज़ होते हैं) (**2**) हमारे सारे ही सरकारी अफ़्सर रिश्वत ख़ोर हैं (**3**) इलेक्ट्रिक सप्लाय वाले सब के सब बद मआ़श हैं (مَعَاذَاللّٰه) (**4**) हुकूमत में सब के सब चोर भरे हैं वग़ैरा।

बक़र ईद पर किये जाने वाले फ़ुज़ूल सुवालात की 19 मिसालें

बक़र ईद के मौक़अ़ पर बग़ैर लेने देने के किये जाने वाले फ़ुज़ूल सुवालात की मिसालें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : (**1**) हा गाय लेने कब जाएंगे ? (**2**) आज कल तो मन्डी तेज़ हो गई होगी ! (**3**) हां भई ! गाय कितने में लाए ? (**4**) यार ! गाय है तो बड़ी जानदार ! (**5**) कितने दांत की है ? (**6**) टक्कर तो नहीं मारती ? (**7**) चला कर लाए या सूज़ूकी में ? (**8**) सूज़ूकी वाले

ने कितना किराया लिया ? (**9**) कब कटेगी ? (**10**) क़स्साब वक़्त पर आया या नहीं ? (**11**) क़स्साब छुरी फैर कर चला गया फिर बड़ी देर से आया (**12**) हां यार ! क़स्साब लोग लटका देते हैं (**13**) फुलां की गाय क़स्साब के हाथ से छूट कर भाग खड़ी हुई, बड़ा मज़ा आया ! (**14**) हां यार ! क़स्साब अनाड़ी था ! (इस जुम्ले में ग़ीबत, तोहमत, दिल आज़ारी, बद गुमानी और बद अल्क़ाबी वग़ैरा गुनाहों की बदबू है अलबत्ता अगर वाक़ेई वोह क़स्साब अनाड़ी हो और जिस को कहा उस को उस से बचाना मक़्सूद हो तो इस जुम्ले में ह़रज नहीं) (**15**) आप का बकरा कितने दांत का है ? (**16**) कितने में मिला ? (**17**) ओहो ! बड़ा महंगा मिला (**18**) चलता भी है या नहीं ? (**19**) कितनी कटाई लगी ? वग़ैरा वग़ैरा।

फ़ोन पर की जाने वाली फ़ुज़ूल बातों की 5 मिसालें

फ़ोन पर भी अक्सर ग़ैर ज़रूरी सुवालात की तरकीब रहती है, पांच मिसालें ह़ाज़िरे ख़िदमत हैं : (**1**) क्या कर रहे हो ? (**2**) कहां हो ? (**3**) गाड़ी में फ़ोन आया तो सामने से सुवाल होगा इस वक़्त आप के पास कौन कौन है ? (**4**) किधर से गुज़र

रहे हो ? (**5**) कहां तक पहुंचे ? वग़ैरा । हां जो जो सुवाल ज़रूरतन किया जाए वोह फ़ुज़ूल नहीं कहलाएगा मगर बा'ज़ सुवालात आदमी को शरमिन्दा कर के झूट पर मजबूर कर सकते हैं म-सलन हो सकता है कि सुवाल नम्बर 1-2-3 का जवाब वोह दुरुस्त न दे पाए क्यूं कि वोह नहीं चाहता कि किसी को पता चले कि क्या कर रहा है या कहां है या उस के पास कौन कौन है । बस काम की बात वोह भी ह़स्बे ज़रूरत करने ही में दोनों जहां की आ़फ़िय्यत है ।

झूट पर मजबूर करने वाले सुवालात की 14 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात लोग ऐसे सुवालात कर देते हैं कि जवाब देने में बे एह़तियाती और मुरुव्वत की वजह से आदमी के मुंह से झूट निकल सकता है अगर्चे सुवाल करने वाला गुनहगार नहीं ताहम मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने के लिये बिला ज़रूरत इस त़रह़ के सुवालात से इज्तिनाब (या'नी परहेज़) करना मुनासिब है । सुवालात की 14 मिसालें ह़ाज़िर हैं : (**1**) हमारा घर ढूंडने में कोई परेशानी तो नहीं हुई ? (**2**) हमारे घर का खाना पसन्द आया ? (**3**) मेरे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

हाथ की चाय कैसी थी ? (**4**) हमारा घर आप को अच्छा लगा ? (**5**) मेरे लिये दुआ़ करते हैं या नहीं ? (**6**) मैं ने अभी जो बयान किया आप को कैसा लगा ? (**7**) मैं ने जो ना'त शरीफ़ पढ़ी थी इस में आप को मेरी आवाज़ कैसी लगी ? (**8**) मेरी बात आप को बुरी तो नहीं लगी ? (**9**) मेरे आने से आप को तक्लीफ़ तो नहीं हुई ? (**10**) मेरी वजह से आप को बोरियत तो नहीं हो रही ? (**11**) मैं आ कर आप की बातों में कहीं मुख़िल तो नहीं हो गया ? (**12**) आप मुझ से नाराज़ तो नहीं ? (**13**) आप मुझ से ख़ुश हैं ना ? (**14**) मेरे बारे में आप का दिल तो साफ़ है ना ? वग़ैरा।

सब से ख़त़रनाक अबुल फ़ुज़ूल

बा'ज़ लोग तो बड़े ही अ़जीब होते हैं, बात बात पर ख़्वाह म ख़्वाह इस त़रह़ ताईद त़लब करते हैं : (**1**) हां भई क्या समझे ? (**2**) मेरी बात का मत़्लब समझ गए ना ? (अलबत्ता ज़रूरतन शागिर्दों या मा तह़्तों से उस्ताज़ या बुज़ुर्गों वग़ैरा का पूछना कभी मुफ़ीद भी होता है ताकि किसी को समझ में न आया हो तो समझाया जा सके। ऐसे मौक़अ़ पर समझ में न आने की सूरत में सामने वाले को चाहिये कि झूट मूट हां में हां न मिलाए)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

(**3**) क्यूं भई ! ठीक है ना ! (**4**) ''मैं ग़लत़ तो नहीं कह रहा !'' (**5**) ''क्या ख़याल है आप का ?'' अब बात लाख ना क़ाबिले क़बूल हो मगर मुरुव्वत में हां में हां मिला कर बारहा झूट बोलने का गुनाह करना पड़ता है। ऐसे बातूनी लोगों की इस्लाह़ की हिम्मत न पड़ती हो तो फिर इन से कोसों दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है कि इन की गुनाहों भरी बातों में भी हां में हां मिलाना कहीं जहन्नम में न पहुंचा दे ! यहां तक देखा है कि इस त़रह़ के बकवासी लोग कभी तो गुमराही की बातें बल्कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्रियात बक कर भी ह़स्बे आ़दत ताईद ह़ासिल करने के लिये : ''क्यूं जी ठीक कह रहा हूं ना ?'' कह कर सामने वाले से हां कहलवा कर बा'ज़ अवक़ात उस का भी ईमान बरबाद करवा देते हैं। क्यूं कि होश व ह़वास के साथ कुफ़्र की ताईद भी कुफ़्र है।** اَلعِیاذُ بِاللّٰه عزوجل

ऐ काश ! ज़रूरत के सिवा कुछ भी न बोलूं
अल्लाह ज़बां का हो अ़त़ा कुफ़्ले मदीना

फ़ुज़ूल बात की ता'रीफ़

बात करने में जहां एक लफ़्ज़ से काम चल सकता हो वहां मज़ीद दूसरा लफ़्ज़ भी शामिल किया तो येह दूसरा लफ़्ज़

"फ़ुज़ूल" है। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى "**एह़याउल उ़लूम**" में फ़रमाते हैं : अगर एक कलिमे (या'नी लफ़्ज़) से इस (बात करने वाले) का मक़्सूद ह़ासिल हो सकता हो और वोह दो कलिमे इस्ति'माल करे तो **दूसरा कलिमा** फ़ुज़ूल होगा। या'नी ह़ाजत से ज़ियादा होगा और जो लफ़्ज़ ह़ाजत से ज़ाइद है वोह मज़्मूम है। (एह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 141) अगर एक लफ़्ज़ से मक़्सूद ह़ासिल न होता हो तो ऐसी सूरत में दो या ह़स्बे ज़रूरत जितने भी अल्फ़ाज़ बोले गए वोह **फ़ुज़ूल** नहीं। बहर ह़ाल **फ़ुज़ूल** बात उस कलाम को कहा जाएगा जो बे फ़ाएदा हो। **ज़रूरत, ह़ाजत या मन्फ़अ़त** इन तीनों द–रजों में से किसी भी "द–रजे" के मुत़ाबिक़ जो बात की गई वोह **फ़ुज़ूल** नहीं, और बा'ज़ अवक़ात **ज़ीनत** के दरजे मे की जाने वाली गुफ़्त–गू भी **फ़ुज़ूल** नहीं होती म–सलन अश्आ़र, बयान या मज़्मून में तह़सीने कलाम (या'नी बात में हुस्न पैदा करने) के लिये ह़स्बे ज़रूरत **मुक़फ़्फ़ा व मसज्जअ़** (या'नी क़ाफ़ियेदार) अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जाते हैं येह भी फ़ुज़ूल नहीं कहलाते। कभी मुख़ात़ब (या'नी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

जिस से बात की जा रही है उस के) तफ़्हुम या'नी समझने की सलाहिय्यत को मद्दे नज़र रखते हुए भी ज़रूरतन अल्फ़ाज़ की कमी और ज़ियादती की सूरत बनती है। जो कि **फ़ुज़ूल तफ़्हीम** या'नी समझाने के ए'तिबार से लोगों की तीन क़िस्में की जा सकती हैं (**1**) इन्तिहाई ज़हीन (**2**) मु-तवस्सित या'नी दरमियाने द-रजे का ज़हीन (**3**) ग़बी या'नी कुन्द ज़ेह्न। जो "इन्तिहाई ज़हीन" होता है वोह बा'ज़ अवक़ात सिर्फ़ एक लफ़्ज़ में बात की तह तक जा पहुंचता है जब कि दरमियाने द-रजे की समझ रखने वाले को बिग़ैर ख़ुलासे के समझना दुश्वार होता है, रहा कुन्द ज़ेह्न तो उस को बसा अवक़ात दस बार समझाया जाए तब भी कुछ पल्ले नहीं पड़ता। मुख़ा-तबीन की इस क़िस्म के मुताबिक़ येह बात ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि जो **एक लफ़्ज़** में बात समझ गया उस को अगर उसी बात के लिये दूसरा लफ़्ज़ भी कहा तो येह **दूसरा लफ़्ज़** फ़ुज़ूल क़रार पाएगा, इसी तरह दरमियानी अक़्ल वाला अगर 12 अल्फ़ाज़ में समझ पाता है तो उस के समझ जाने के बा वुजूद उसी बात का 13वां या इस से ज़ाइद जो लफ़्ज़ बिला मस्लहत बोला गया

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

वोह **फ़ुज़ूल** ठहरेगा और रहा कुन्द ज़ेह्न कि अगर 100 अल्फ़ाज़ के बिग़ैर बात इस के ज़ेह्न में नहीं बैठती तो येह 100 अल्फ़ाज़ भी चूंकि ज़रूरत की वजह से बोले गए लिहाज़ा **फ़ुज़ूल गोई** नहीं कहलाएंगे। बहर ह़ाल जितने अल्फ़ाज़ में मक़्सूद ह़ासिल हो जाता है उस से अगर एक लफ़्ज़ भी ज़ाइद बोला गया तो वोह **फ़ुज़ूल** है। हां वोह कलाम जो कि जाइज़ ह़क़ है मगर **बे फ़ाएदा** है उस का "एक लफ़्ज़" बोलना भी **फ़ुज़ूल** ही ठहरेगा और अगर वोह बात **ना जाइज़** है तो उस का "एक लफ़्ज़" बोलना भी ना जाइज़ व गुनाह क़रार पाएगा।

जो अल्लाह व आख़िरत पर ईमान रखता हो

येह तफ़्सील सुन कर हो सकता है कि ज़ेह्न में आए कि फ़ुज़ूल बात से बचना बेह़द दुश्वार है। हिम्मत मत हारिये, कोशिश जारी रखिये ज़बान का **क़ुफ़्ले मदीना** लगाने (या'नी ख़ामोशी) की आ़दत बनाने के लिये मुम्किना सूरत में कुछ न कुछ इशारे से या लिख कर बात करने की तरकीब बनाइये कि निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान। मक़ूला है : اَلسَّعْیُ مِنِّیْ وَالْاِتْمَامُ مِنَ اللّٰه या'नी कोशिश करना मेरा काम और पूरा करने वाला **अल्लाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

عَزَّوَجَلَّ है। **ख़ामोशी** की आ़दत बनाने के लिये बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक को ह़िफ़्ज़ कर लीजिये اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ काफ़ी सहूलत रहेगी। वोह ह़दीसे मुबा-रका येह है : मदीने के सुल्त़ान, सरकारे दो जहान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या **ख़ामोश** रहे।"

(सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 4, स. 105, ह़दीस : 6018, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

निराले फ़ुज़ूल गो

बा'ज़ लोग ख़ुद तो फ़ुज़ूल गो होते ही हैं दूसरों को भी दो मर्तबा बोलने पर मजबूर करते हैं! ग़ौर फ़रमा लीजिये कि ना दानिस्ता त़ौर पर येह ग़-लत़ी कहीं आप से भी तो सरज़द नहीं हो जाती! दो मर्तबा बोलने पर मजबूर करने की सूरत येह है : म-सलन **ज़ैद** कुछ बात कहता है तो **बक्र** समझ लेने के बा वुजूद चौंकने के अन्दाज़ में सुवालिया अन्दाज़ में सर ऊपर उठा कर इशारा करता है और अक्सर मुंह से सुवालिया अन्दाज़ ही में निकलता है "हूं ?" "जी ?" (हैं ? क्या ?) इस त़रह़ "जी ?" या "हैं ?" इस के जवाब में ज़ैद को अपनी बात ख़्वाह म ख़्वाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है। (ابویعلی)

दोहरानी पड़ती है। **सगे मदीना** عُفِيَ عَنْهُ को चूंकि बा'ज़ लोगों की इस आ़दत का तज्रिबा है इस लिये मुख़ातब के "हैं हूं" कहने पर अपनी बात दोहराने के बजाए अक्सर ख़ामोशी इख़्तियार कर लेता है और उ़मूमन नतीजतन येह बात सामने आती है कि मुख़ातब (या'नी जिस से बात की है वोह) समझ चुका था ! फ़ुज़ूल आ़दतें निकालने के लिये ख़ूब जिद्दो जुहद करनी पड़ेगी, सिर्फ़ एक आध बयान सुन कर (या तह़रीर पढ़ते ही) इस त़रह़ की आ़दत निकल जाए इस की उम्मीद न होने के बराबर है। आप ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कीजिये और अपने आप को ज़ेह़नी त़ौर पर तय्यार फ़रमाइये कि किसी की बात सुन कर एक दम से "हैं ?" "क्या ?" वग़ैरा नहीं कहा करूंगा फिर भी भूल हो जाए तो अपना एह़तिसाब कीजिये।

गुफ़्त-गू का जाएज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की बात चीत की एह़तियातें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" में है : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की मुलाक़ात हुई। उन्हों ने आपस में गुफ़्त-गू की

और फिर दोनों रोए फिर सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ अबू अ़ली (येह ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल की कुन्यत है) ''मैं आज की इस सोह़बत से बहुत सवाब की उम्मीद रखता हूं।'' सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''मैं आज की इस सोह़बत से बहुत ख़ौफ़ज़दा हूं।'' सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : क्यूं ? सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : क्या हम दोनों अपनी गुफ़्त-गू को आरास्ता नहीं कर रहे थे ? क्या हम तकल्लुफ़ में मुब्तला नहीं थे ? सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह सुन कर रो पड़े। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 44)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है। उन नेक बन्दों की मुलाक़ात रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये और उन की बात चीत ख़ालिस इस्लामी हुवा करती थी। मगर उन का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये ! दोनों औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस डर से रो रहे हैं कि हमारी गुफ़्त-गू में कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी तो नहीं हो गई। कहीं हम फ़ुज़ूल या बिला वजह ख़ूब सूरत जुम्ले तो नहीं बोल गए ! इस से वोह लोग दर्स ह़ासिल करें जो अपनी मा'लूमात का लोहा मनवाने के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

लिये बत़ौरे रियाकारी उर्दू में बात करते वक़्त अ़-रबी, फ़ारसी और इंग्लिश के मुश्किल लफ़्ज़ों, मुह़ावरों और मुक़फ़्फ़ा जुम्लों का ब कसरत इस्ति'माल करते हैं।

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स इस मक़्सद के लिये बात का हैर फैर सीखे कि इस के ज़रीए़ मर्दों या लोगों के दिल फांस ले। तो **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला बरोज़े क़ियामत न उस के फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाए न नफ़्ल।" (सु-ननु अबी दावूद, जि. 4, स. 391, ह़दीस : 5006, दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत)

मुह़क़्क़िक़े अ़लल इ़त्लाक़, ख़ा-तमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : صَرْفُ الْكَلَام (या'नी बातों में हैर फैर) से मुराद येह है कि तह़्सीने कलाम में (या'नी कलाम में हुस्न पैदा करने के लिये) झूट, किज़्ब बयानी बत़ौरे रियाकारी की जाए और इल्तिबास व अब्हाम (या'नी यक्सानिय्यत का शुबा) पैदा करने के लिये इस में रद्दो बदल कर लिया जाए। (अशि'अ़तुल्लम्आ़त, जि. 4, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب وترہیب)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 1, स. 55, ह़दीस : 175, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"मदीने की ह़ाज़िरी" के बारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल

(1) जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ़ पढ़िये : "بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बिग़ैर न त़ाक़त हे न क़ुव्वत। (अबू दावूद, जि. 4,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

स. 420, ह़दीस : 5095) اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस दुआ़ को पढ़ने की ब-र-कत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से ह़िफ़ाज़त होगी और **अल्लाहुस्समद** عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले ह़ाल रहेगी **(2)** घर में दाख़िल होने की दुआ़ : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَ خَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَ عَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا (ऐज़न, ह़दीस : 5096) (तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दाख़िल होने की और निकलने की भलाई मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हम ने भरोसा किया) दुआ़ पढ़ने के बा'द घर वालों को सलाम करे फिर बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ करे इस के बा'द सू-रतुल इख़्लास शरीफ़ पढ़े । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ी में ब-र-कत, और घरेलू झगड़ों से बचत होगी **(3)** अपने घर में आते जाते मह़ारिम व मुह़र्रमात (म-सलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये **(4)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बग़ैर म-सलन बिस्मिल्लाह कहे बग़ैर जो घर में दाख़िल होता है शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है । **(5)** अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْن : (या'नी हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे । (रद्दुल मुह़तार, जि. 9, स. 682) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या'नी या नबी आप पर सलाम) क्यूं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक मुसल्मानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 96, शर्ह़ुश्शिफ़ा लिल क़ारी, जि. 2, स. 118) **(6)** जब किसी के घर में दाख़िल होना चाहें तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ? **(7)** अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले तो ब ख़ुशी लौट जाइये हो सकता है किसी मजबूरी के तह़्त साह़िबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो **(8)** जब आप के घर पर कोई दस्तक दे तो सुन्नत येह है कि पूछिये : कौन है ? बाहर वाले को चाहिये कि अपना नाम बताए : म-सलन कहे : ''मुह़म्मद इल्यास।'' नाम बताने के बजाए इस मौक़अ़ पर ''मदीना !'', ''मैं हूं !'', ''दरवाज़ा खोलो'' वग़ैरा कहना सुन्नत नहीं **(9)** जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े **(10)** किसी के घर में झांकना मम्नूअ़ है। बा'ज़ लोगों के मकान के सामने नीचे की

त़रफ़ दूसरों के मकानात होते हैं लिहाज़ा बालकूनी वग़ैरा से झांकते हुए इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि उन के घरों में नज़र न पड़े (**11**) किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न कीजिये इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है (**12**) वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये । **त़रह़** त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब ''बहारे शरीअ़त'' ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमे'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी इन्आमात** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, टी कोनिया बगीचे के पास, मिर्ज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-6, फ़ोन : 011-23284560
मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, टाउन फ्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
हैदरआबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net